रूप का गर्व
(सनत्कुमार चक्रवर्ती)

प्राचीनकाल में हस्तिनापुर में अश्वसेन राजा का राज्य था। राजा की पटरानी थी सहदेवी। एक रात रानी सहदेवी ने चौदह स्वप्न देखे।

प्रातः उठकर उसने महाराज अश्वसेन को बताया। राजा ने राज-ज्योतिषी को बुलाकर स्वप्नफल पूछा-

कुछ समय बाद रानी ने तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया। बारहवें दिन पुत्र का नामकरण उत्सव मनाया गया। परिजनों के बीच पण्डित ने कहा–

कुंभ राशि होने के कारण बालक का नाम सनत्कुमार होना चाहिए।

राजकुमार सनत्कुमार चिरायु हों।

सनत्कुमार आठ वर्ष का हुआ तो राजा ने कलाचार्य को आमंत्रित किया और कहा–

आचार्य प्रवर ! जैसे कुशल कुंभकार माटी को मनचाहे मनोहर आकार में ढाल देता है। उसी प्रकार आप इस बालक का जीवन निर्माण कीजिए।

राजन् ! यह बालक तो स्वयं कल्पवृक्ष का अंकुर है, मेरा काम तो केवल जल सींचकर विकसित करना है।

आचार्य के साथ सनत्कुमार गुरुकुल में आ गया।

गुरुकुल में ही महेन्द्र नामक एक क्षत्रिय कुमार के साथ सनत्कुमार की मित्रता हो गई।एक दिन महेन्द्र बोला–

देखो, मित्रता करके छोड़ मत देना।

मित्र, जैसे मेरी काया के साथ छाया लगी है। वैसे ही मैं कभी तुझे अपने से दूर नहीं होने दूँगा।

सनत्कुमार और महेन्द्र गुरुकुल में शास्त्र और शस्त्र दोनों प्रकार की विद्यायें सीखने लगे।

कुछ वर्ष पश्चात् विद्याध्ययन पूर्ण करके सनत्कुमार पिता के साथ राजसभा में बैठने लगा। उसका अद्‌भुत तेज और अद्वितीय सौन्दर्य देखकर लोग चर्चा करते–

अपने कुमार को देखकर ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग का इन्द्र या कामदेव ही धरती पर आ गया है। कितना तेजस्वी रूप है इसका!

एक दिन बसन्त ऋतु के समय सनत्कुमार और उसका मित्र महेन्द्र नगर के बाहर मकरंद उद्यान में गये। उधर से घोड़ों का एक व्यापारी गुजर रहा था। राजकुमार को वहाँ देखकर उद्यान में आ गया। महेन्द्र ने उसका परिचय दिया–

राजकुमार ! यह अपने ही नगर के प्रसिद्ध अश्व-व्यापारी हैं।

हाँ, राजकुमार ! मैं कौशाम्बी से उत्तम जाति के अश्व खरीदकर लाया हूँ।

राजकुमार को घुड़सवारी का बहुत शौक था। वह अश्व-पारखी भी था। उसने एक चपल श्वेत अश्व को छाँटा और उस पर सवार हो गया।

महेन्द्र ! तुम यहीं रुको। मैं जरा घुड़सवारी का आनन्द लेकर आता हूँ।

सनत्कुमार ने घोड़े को एड़ लगाई कि घोड़ा जैसे हवा में उड़ने लगा।

देखते ही देखते वह सबकी आँखों से ओझल हो गया।